पराग 6

पाठ 1. श्रम महान है

पाठ का परिचय

इस कविता के माध्यम से कवि बच्चों को श्रम का महत्व समझा रहे हैं। श्रम ही संसार में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। श्रम करने वाले व्यक्ति का सदा संसार में सम्मान होता है। ताजमहल जैसी अद्‌भुत सौंदर्य की इमारत बनानी हो या लाल किले जैसी दृढ़ इमारत, सबका आधार श्रम ही है। श्रम से ही भाखड़ा जैसे विशाल बाँध बनाए जा सकते हैं। बड़े-बड़े उद्‌योग जिनसे हमारे दैनिक उपयोग की चीज़ें बनती हैं, वे भी श्रम से ही चलते हैं। इतना ही नहीं जिस अन्न को खाकर हम जीवित रहते हैं, उसे उगाने के लिए भी किसान को खेतों में अथक परिश्रम करना पड़ता है। यह भारतीय किसानों के श्रम का ही फल है कि आज वे स्वयं अपनी जमीन के मालिक हैं। श्रम करने से मनुष्य के चेहरे पर अद्‌भुत तेज आ जाता है। शरीर स्वस्थ एवं चुस्त रहता है। श्रम को कवि ने जप-तप और पूजा-ध्यान के समान बताया है। श्रम को सबसे बड़ा दान कहा गया है। श्रम के कारण सबका मान-सम्मान तथा महत्व बढ़ता है इसलिए सब लोग श्रम का गुणगान करते हैं। जो लोग श्रम का महत्व नहीं समझते, इसका मूल्य नहीं समझते वे वास्तव में नादान हैं।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

प्रत्येक व्यक्ति को अपना कार्य स्वयं करने की आदत डालनी चाहिए। इससे धीरे-धीरे परिश्रम करने का गुण विकसित हो जाएगा तथा आत्मसम्मान की भावना विकसित होगी।

पाठ का वाचन

कविता का सस्वर गान करें। एक-एक पंक्ति को पढ़ते जाएँ तथा उसका सरल अर्थ बच्चों को समझाते जाएँ। बच्चों को कविता कंठस्थ करने को कहें। तथा उनसे समूहगान में इसका पाठ करवाएँ।

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से निम्नलिखित प्रश्न पूछते हुए चर्चा करें –

- तुम अपना क्या-क्या काम करते हो?
- किन कामों में तुम अपने परिवारवालों की सहायता करते हो?
- श्रम करना तन और मन दोनों के लिए किस प्रकार लाभप्रद है?
- शारीरिक श्रम और मानसिक श्रम में क्या अंतर है?